

## १०. महत्त्वाकांक्षा और लोभ

— पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी

**लेखक परिचय :** पदुमलाल बख्शी जी का जन्म २७ मई १८९४ को खैरागढ़ (छत्तीसगढ़) में हुआ। बी.ए. के पश्चात आप साहित्य क्षेत्र में आए। आपके निबंध जीवन की सच्चाइयों को बड़ी सरलता से व्यक्त करते हैं। नाटकों—सी रमणीयता तथा कहानी—सी मनोरंजकता आपके निबंधों को विशिष्ट शैली प्रदान करती है। समसामयिक होते हुए भी निबंधों की प्रासंगिकता आज भी बरकरार है। बख्शी जी की मृत्यु १९७९ में हुई।

**प्रमुख कृतियाँ :** ‘पंचपात्र’, ‘पद्यवन’, ‘कुछ’, ‘और कुछ’ (निबंध संग्रह), ‘कथा चक्र’ (उपन्यास), ‘हिंदी साहित्य विमर्श’ और ‘विश्व साहित्य’ (समीक्षात्मक ग्रंथ) आदि।

**विधा परिचय :** ‘निबंध’ को गद्य की कसौटी कहा गया है। किसी विषय या वस्तु पर उसके स्वरूप, प्रकृति, गुण-दोष आदि की दृष्टि से लेखक की गद्यात्मक अभिव्यक्ति निबंध है। निबंध के लक्षणों में स्वच्छंदता, सरलता, आडंबरहीनता, घनिष्ठता और आत्मीयता के साथ लेखक के व्यक्तिगत, आत्मनिष्ठ दृष्टिकोण का भी उल्लेख किया जाता है। आचार्य रामचंद्र शुक्ल, आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, कन्हैयालाल मिश्र ‘प्रभाकर’, विद्यानिवास मिश्र आदि प्रमुख निबंधकार हैं।

**पाठ परिचय :** प्रस्तुत वैचारिक निबंध अति महत्त्वाकांक्षा के साथ असंतोष, अति लालसा, स्वयं को सर्वशक्तिमान बना लेने की उत्कट अभिलाषा तथा कृतघ्नता के दुष्परिणामों को इंगित करता है। प्राप्य के प्रति विरक्ति का भाव तथा अप्राप्य की लालसा हमेशा मानव मन को लोभ के जाल में फँसाती रहती है। मछुवा-मछुवी की कहानी के माध्यम से मानव मन की अनंत इच्छाओं के परिणाम का रोचक चित्रण इस निबंध में किया गया है। यह निबंध विचार करने के लिए प्रवृत्त करता है।

बड़ों में जो महत्त्वाकांक्षा होती है, उसी को जब हम क्षुद्रों में देखते हैं तो उसे हम लोभ कह देते हैं। उसी के संबंध में आज एक पुरानी कथा कहता हूँ।

एक था मछुवा, एक थी मछुवी। दोनों किसी झाड़ के नीचे एक टूटी-फूटी झोंपड़ी में अपना जीवन व्यतीत कर रहे थे। मछुवा दिन भर मछलियाँ पकड़ता, मछुवी दिन भर दूसरा काम करती। तब कहीं रात में वे लोग खाने के लिए पाते। ग्रीष्म हो या वर्षा, शरद हो या वसंत, उनके लिए वही एक काम था, वही एक चिंता थी। वे भविष्य की बात नहीं सोचते थे क्योंकि वर्तमान में ही वे व्यस्त रहते थे। उन्हें न आशा थी, न कोई लालसा।

पर एक दिन एक घटना हो गई। मछुवा आ रहा था मछलियाँ पकड़ने। नदी के पास एक छोटा-सा गड्ढा था। उसमें कुछ पानी भरा था। उसी में एक कोने पर, लताओं में, एक छोटी-सी मछली फँस गई थी। वह स्वयं किसी तरह पानी में नहीं जा सकती थी। उसने मछुवे को देखा और पुकारकर कहा – “मछुवे, मछुवे, जरा इधर तो आ।”

मछुवा उसके पास जाकर बोला – “क्या है?”

मछली ने कहा – “मैं छोटी मछली हूँ। अभी तैरना अच्छी तरह नहीं जानती। यहाँ आकर फँस गई हूँ। मुझको किसी तरह यहाँ से निकालकर पानी तक पहुँचा दे।”

मछुवे ने नीचे उतरकर लता से उसको अलग कर दिया। मछली हँसती हुई पानी में तैरने लगी।

कुछ दिनों के बाद उस मछली ने उसे फिर पुकारा – “मछुवे, मछुवे, इधर तो आ।” मछुवा उसके पास गया। मछली ने कहा – “सुनती हूँ, नदी में खूब पानी है। मुझे नदी में पहुँचा दे। मैं तो तेरी तरह चल नहीं सकती। तू कोई ऐसा उपाय कर कि मैं नदी तक पहुँच जाऊँ।”

“यह कौन बड़ी बात है।” मछुवे ने यह कहकर एक बर्तन निकाला और उसमें खूब पानी भर दिया। फिर उसने उसी में उस मछली को रखकर नदी तक पहुँचा दिया। मछली नदी में सुरक्षित पहुँच गई और आनंद से तैरने लगी।

कुछ दिनों के बाद उस मछली ने मछुवे को पुकारकर कहा – “मछुवे, तू रोज यहाँ आकर एक घंटा बैठा कर। तेरे आने से मेरा मन बहल जाता है।”

मछुवे ने कहा – “अच्छा।”

उस दिन से वह रोज वहीं आकर आधा घंटा बैठा करता। कभी-कभी वह आटे की गोलियाँ बनाकर ले जाता। मछली उन्हें खाकर उसपर और भी प्रसन्न होती।

एक दिन मछुवी ने पूछा - “तुम रोज उसी एक घाट पर क्यों जाते हो?”

मछुवे ने उसको उस छोटी मछली की कथा सुनाई। मछुवी सुनकर चकित हो गई। उसने मछुवे से कहा - “तुम बड़े निर्बुद्धि हो! वह क्या साधारण मछली है! वह तो कोई देवी होगी, मछली के रूप में रहती है। जाओ, उससे कुछ माँगो। वह जरूर तुम्हारी इच्छा पूरी करेगी।”

मछुवा नदी के तट पर पहुँचा। उसने मछली को पुकारकर कहा - “मछली, मछली, इधर तो आ।”

मछली आ गई। उसने पूछा - “क्या है?”

मछुवे ने कहा - “हम लोगों के लिए क्या तू एक अच्छा घर नहीं बनवा देगी?”

मछली - “अच्छा जा! तेरे लिए एक घर बन गया। तेरी मछुवी घर में बैठी है।”

मछुवे ने आकर देखा कि सचमुच उसका एक अच्छा घर बन गया है। कुछ दिनों के बाद मछुवी ने कहा - “सिर्फ घर होने से क्या हुआ? खाने-पीने की तो तकलीफ है। जाओ, मछली से कुछ धन माँगो।”

मछुवा फिर नदी तट पर गया। उसने मछली को पुकारकर कहा - “मछली, मछली! इधर तो आ।”

मछली ने आकर पूछा - “क्या है?”

मछुवे ने कहा - “सुन तो, क्या तू हमें धन देगी?”

मछली ने कहा - “जा, तेरे घर में धन हो गया।”

मछुवे ने आकर देखा कि सचमुच उसके घर में धन हो गया है। कुछ दिनों के बाद मछुवी ने कहा - “इतने धन से क्या होगा? हमें तो राजकीय वैभव चाहिए। राजा की तरह एक महल हो, उसमें बाग हो, नौकर-चाकर हो और राजकीय शक्ति हो। जाओ, मछली से यही माँगो।”

मछुवी की यह बात सुनकर मछुवा कुछ हिचकिचाया। उसने कहा - “जो है, वही बहुत है।” परंतु मछुवी ने उसकी बात न सुनी। उसने स्वयं मछली की दिव्य शक्ति देख ली थी। यही नहीं, एक बार जब वह मछली को आटे की



गोलियाँ खिला रही थी, तब मछली से उसे आश्वासन भी मिल गया था; इसी से उसने मछुवे को हठपूर्वक भेजा।

मछुवा कुछ डरता हुआ मछली के पास पहुँचा। उसने मछली को पुकारा और धीरे से कहा - “क्या तू मछुवी को रानी बना देगी?”

मछली ने कहा - “अच्छा जा, तेरी मछुवी रानी बनकर महल में अभी घूम रही है।”

मछुवे ने आकर देखा कि सचमुच उसके घर में राजकीय वैभव हो गया है। उसकी मछुवी रानी होकर बैठी है। कुछ दिनों के बाद मछुवी ने फिर कहा - “अगर सूर्य, चंद्र, मेघ आदि सभी मेरी आज्ञा मानते तो कैसा होता?” उसने पुनः मछुवे को उसकी इच्छा के विरुद्ध मछली के पास भेजा।

मछुवे की बात सुनकर मछली रुष्ट होकर बोली - “जा-जा, अपनी उसी झोंपड़ी में रह।”

मछुवा और मछुवी दोनों फिर अपनी उसी टूटी-फूटी झोंपड़ी में रहने लगे। यहीं कहानी का अंत हो जाता है।

कहानी पुरानी है और घटना भी झूठी है। उसकी एक भी बात सच नहीं है पर इसमें हम लोगों के मनोरथों की सच्ची कथा है। आकांक्षाओं का कब अंत हुआ है? इच्छाओं की क्या कोई सीमा है? पर मछुवे के भाग्य परिवर्तन पर कौन उसके साथ सहानुभूति प्रकट करेगा? सभी यह कहेंगे कि यह तो उसका ही दोष था। उसकी स्त्री को संतोष ही नहीं था। यदि उसे संतोष हो जाता तो उसकी यह दुर्गति क्यों होती? मछुवे ने भी शायद यही कहकर अपनी स्त्री को झिड़का होगा परंतु मैं स्त्री को निर्दोष समझता

हूँ। मेरी समझ में दोष मछली का ही है। यदि वह पहले ही मछुवे को कह देती कि मुझमें सब कुछ करने की शक्ति नहीं है तो मछुवे की स्त्री उससे ऐसी याचना ही क्यों करती? यदि मछुवे की स्त्री में संतोष ही रहता तो वह पहली बार ही अपने पति को माँगने के लिए क्यों कहती? मछली ने पहले तो अपने वरदानों से यह बात प्रकट कर दी कि मानो वह सब कुछ कर सकती है किंतु जब मछुवे की स्त्री ने कुछ ऐसी याचना की जो उसकी शक्ति के बाहर थी, तब वह एकदम क्रुद्ध होकर अभिशाप ही दे बैठी। उसने मछुवे के उपकार का भी विचार नहीं किया। वह यह भूल गई कि मछुवे ने यदि उस समय उसपर दया न की होती तो शायद उसका अस्तित्व ही न रहता। उसने मछुवे से यह क्यों नहीं कहा – “जा भैया, मैं तेरे लिए बहुत कर चुकी। अब मैं कुछ नहीं कर सकती। अपनी रानी को समझा देना।”

हम सभी लोग अपने जीवन में यही भूल करते हैं। हम लोग अपने दोषों को छिपाकर दूसरों पर ही दोषारोपण करते हैं। हम दूसरों के कामों को महत्ता न देकर अपने ही कामों को महत्त्व देते हैं। हम यह निस्संकोच कहते हैं कि हमने किसी पर यह उपकार किया पर हम यह नहीं बतलाते कि उसने हमारी क्या सेवा की, उससे हमें क्या लाभ हुआ। सच तो यह है कि उपकार और सेवा एक बात है और यह लेन-देन कुछ दूसरी बात है।

मछुवे की स्त्री ने जो कुछ किया, वह ठीक ही किया था। सभी लोग जानते हैं कि जब तक कोई वस्तु अप्राप्य रहती है तभी तक उसके लिए बड़ी व्यग्रता रहती है। ज्योंही

वह प्राप्त हो जाती है त्योंही हमें उससे विरक्ति हो जाती है और हम किसी दूसरी वस्तु के लिए व्यग्र हो जाते हैं।

अतएव मछुवे की स्त्री ने जो कुछ किया, वह मनुष्य स्वभाव के अनुकूल किया परंतु मछली ने जो कुछ किया, वह अपने दैवी स्वभाव के विरुद्ध किया। उसे तो मछुवे पर दया करनी चाहिए थी। उसे उसके उपकार को न भूलना था। राजा बनने के बाद उसे एकदम भिक्षुक बना देना कभी उचित नहीं कहा जा सकता। यदि मैं मछुवा होता तो उससे कहता – देवी, मैंने जब तुम्हें जल में छोड़ा था तब मैंने यह नहीं सोचा था कि तुम मुझे राजा बनाओगी। मैंने तो वह काम निस्वार्थ भाव से ही किया था। अपनी स्त्री के कहने पर तुमको देवी समझकर मैंने याचना की। तुमने भी याचना स्वीकृत की पर तुमने क्या मेरी स्त्री के हृदय में अभिलाषा नहीं पैदा कर दी? क्या तुमने उसके मन में यह आशा नहीं जगा दी कि तुम उसके लिए सब कुछ कर सकती हो? वह तो पहले अपनी स्थिति से संतुष्ट थी। तुम्हारे ही कारण उसके मन में और कई अभिलाषाएँ उत्पन्न हुईं। तुमने उनको भी पूर्ण किया। उसे तुम्हारी शक्ति पर विश्वास हो गया। तभी तो उसने ऐसी इच्छा प्रकट कर दी जो तुम्हारे लिए असंभव थी। तुमने जो कुछ दिया, उस सबको इसी एक अपराध के कारण कैसे ले लिया? तुम्हारे वरदान का अंत अभिशाप में कैसे परिणत हो गया? तुम्हें मेरी और मेरी स्थिति पर विचार कर काम करना चाहिए था। तुम भले ही देवी हो पर तुममें त्याग नहीं है, प्रेम नहीं है, उपकार की भावना नहीं है, क्षमा नहीं है, दया नहीं है।

(‘बख्शी ग्रंथावली’ खंड ७ से)



## शब्दार्थ :

रुष्ट = अप्रसन्न, नाराज  
मनोरथ = इच्छा, कामना

व्यग्रता = अधीरता  
परिणत = रूपांतरित

## स्वाध्याय

### आकलन

#### १. लिखिए :

(अ) मछुवा-मछुवी की दिनचर्या -

.....  
.....

(आ) मछुवा-मछुवी की कहानी का अंत -

.....  
.....

(इ) लेखक द्वारा बताई गई मनुष्य स्वभाव की विशेषताएँ -

- (१) .....  
(२) .....  
(३) .....

### शब्द संपदा

#### २. निम्नलिखित शब्दों के लिए उचित शब्द समूह का चयन कीजिए :

- |             |   |   |
|-------------|---|---|
| (१) अभक्ष्य | - | जो खाने के अयोग्य हो / जो खाया नहीं गया ।                 |
| (२) अदृश्य  | - | जो दिखाई न दे / जो दिखाई नहीं देता ।                      |
| (३) अजेय    | - | जिसे जीता न जा सके / जिसे जीतना कठिन हो ।                 |
| (४) शोषित   | - | जिसका शोषण किया गया है / जो शोषण करता है ।                |
| (५) कृशकाय  | - | जिसका शरीर कुश (घास) के समान हो / जो बहुत दुबला-पतला हो । |
| (६) सर्वज्ञ | - | जो सब कुछ जानता हो / जो सब जगह व्याप्त है ।               |
| (७) समदर्शी | - | जो सबको समान देखता है / जो सबको समान दृष्टि से देखता है । |
| (८) मितभाषी | - | जो कम बोलता है / जो मीठा बोलता है ।                       |

## अभिव्यक्ति

३. (अ) 'अति से तो अमृत भी जहर बन जाता है', इस कथन पर अपने विचार प्रकट कीजिए।  
 (आ) 'महत्वाकांक्षाओं का कभी अंत नहीं होता', इस वास्तविकता को अपने शब्दों में स्पष्ट कीजिए।

## पाठ पर आधारित लघूत्तरी प्रश्न

४. (अ) प्रस्तुत निबंध में निहित मानवीय भावों से संबंधित विचार लिखिए।  
 (आ) पाठ के आधार पर कृतघ्नता, असंतोष के संबंध में लेखक की धारणा लिखिए।

## साहित्य संबंधी सामान्य ज्ञान

५. जानकारी दीजिए :  
 (अ) पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी जी के निबंधों की प्रमुख विशेषताएँ –  
 (१) .....  
 (२) .....  
 (आ) अन्य निबंधकारों के नाम –  
 .....
६. दी गई शब्द पहेली से सुप्रसिद्ध रचनाकारों के नाम ढूँढ़कर उनकी सूची तैयार कीजिए :

म	×	×	प्रे	×	×	सू	×
हा	×	क	म	ले	श्व	र	सू
दे	×	×	चं	×	मा	दा	र्य
वी	प्र	सा	द	कु	र	स	बा
व	×	भा	द्र	बी	नि	रा	ला
र्मा	×	नें	क	×	नी	र	ज
मी	जै	पं	त	र	×	×	×
रा	रां	गे	य	रा	घ	व	×